**eISSN 2581-8996**
ONLINE
**THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)**
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

# कबीर की आध्यात्मिक चेतनाः एक विश्लेषण

**[1]डॉ0 आशुतोष कुमार राय**
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी) राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिरसगंज, फिरोजाबाद

Received: 17 Dec 2023, Accepted: 15 January 2024, Published online: 01 February 2024

## Abstract

कबीर को अपने समय की समस्त ज्ञात अज्ञात साधना पद्धतियों का न केवल ज्ञान था अपितु उन्होंने अपने आध्यात्मिक जीवन के विकास में इन सभी साधना पद्धतियों का समुचित उपयोग भी किया। उदाहरण के लिए सिद्धों की नैरात्म्य साधना, नाथों का हठयोग ,सूफियों का रहस्यवाद तथा शंकराचार्य का अद्वैत वेदांत तथा उपनिषदों की विचारधारा, और वैष्णव प्रपत्तिवाद का सिद्धांत। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कबीर ने उपर्युक्त साधना पद्धतियों में व्याप्त कथित अंतर विरोधों को को दूर कर ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में इन्हें सहगामी विचार पद्धतियों के रूप में ग्रहण किया है।

कबीर आत्मा और परमात्मा में अद्वैत भाव की स्थापना करते हैं और परमात्मा की प्राप्ति के लिए चित्त की शुद्धि पर बल देते हैं। कबीर की साधना पद्धति पर सर्वाधिक प्रभाव सिद्ध और नाथों का है। यहां से कबीर ने सहज साधना नैरात्म्य भावना, आत्म शुद्धि, हठयोग, कुंडलिनी जागरण तथा साधनात्मक रहस्यवाद इत्यादि साधना पद्धतियों को कबीर ने सिद्धों और नाथों से सीधे ग्रहण किया है। साधनात्मक रहस्यवाद के साथ–साथ अपनी साधना पद्धति में कबीर ने सूफियों के भावनात्मक रहस्यवाद का भी उपयोग किया है। ज्ञानमार्ग और योगमार्ग के साथ–साथ कबीर भक्ति मार्ग के भी धीर पथिक हैं। समाज और धर्म की सत्ता के साथ–साथ निरंकुश राज ,सत्ता के सामने डटकर खड़े रहने की प्रेरणा व शक्ति भी कबीर को राम से ही प्राप्त होती है। कबीर के दर्शन के आध्यात्मिक पक्ष के साथ–साथ इसका एक सामाजिक पक्ष भी है। इस सामाजिक पक्ष को हम कबीर की आध्यात्मिक विचारधारा का ही उप उत्पाद कह सकते हैं। कबीर सिर्फ मानव ही नहीं, अपितु प्राणी मात्र की क्षमता और उनमें पारस्परिक समरसता की बात करते हैं।

**बीज शब्द**– अद्वैतवाद, नैरात्म्यवाद, कठमुल्लापन, पुरोहितवाद, कुंडलिनी, हठयोग, साधनात्मक रहस्यवाद, भावनात्मक रहस्यवाद।

## Introduction

संत कबीर प्रतिभा के धनी ऐसे साहित्यकार थे जो अपनी आध्यात्मिक साधना से अर्जित ऊर्जा का उपयोग कविता को माध्यम बनाकर सामाजिक परिष्कार के लिए करते हैं। कबीर संत हैं किंतु ऐसे संत जिसकी विशेषता बताते हुए गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है।

संत हृदय नवनीत समाना, कहा कविन पर कहईं न जाना।

निज परिताप द्रवै नवनीता, परदुख द्रवहि सुसंत पुनीता।[1]


©IJARMS JOURNAL, 2024

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कबीर आध्यात्म का शिखर हैं। भले रामचरितमानस जैसा कोई बड़ा प्रबंध काव्य नहीं लिखा किंतु उनके छोटे–छोटे दोहे आध्यात्म रस से भरपूर हैं। यूं तो कबीर को समाज सुधारक, कवि आदि अनेक रूपों में स्मरण किया जाता है परंतु कबीर का वास्तविक व्यक्तित्व एक संत और भक्त का ही था। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में, "कबीर ने ऐसी बहुत सी बातें कही है जिनसे (अगर उपयोग किया जाए तो ) समाज सुधार में सहायता मिल सकती है, पर इसलिए उनको समाज सुधारक समझना गलती है।

वस्तुतः वे व्यक्तिगत साधना के प्रचारक थे।"2 कबीर ने कहीं भी स्वयं को आध्यात्मिक गुरु या उपदेशक के रूप में प्रस्तुत नहीं किया है। तथापि उनकी समस्त गतिविधियों के केंद्र में आध्यात्मिक साधना और उसकी अभिव्यक्ति ही थी। यदा कदा इस तथ्य की ओर कबीर संकेत भी करते हैं।

तुम जिन जानो गीत है यह निज ब्रह्म विचार

कबीर को अपने समय की समस्त ज्ञात अज्ञात साधना पद्धतियों का न केवल ज्ञान था अपितु उन्होंने अपने आध्यात्मिक जीवन के विकास में इन सभी साधना पद्धतियों का समुचित उपयोग भी किया। उदाहरण के लिए सिद्धों की नैरात्म्य साधना, नाथों का हठयोग, सूफियों का रहस्यवाद तथा शंकराचार्य का अद्वैत वेदांत तथा उपनिषदों की विचारधारा,और वैष्णव प्रपत्तिवाद का सिद्धांत। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कबीर ने उपर्युक्त साधना पद्धतियों में व्याप्त कथित अंतर विरोधों को को दूर कर ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में इन्हें सहगामी विचार पद्धतियों के रूप में ग्रहण किया है।

कबीर आत्मा और परमात्मा में अद्वैत भाव की स्थापना करते हैं और परमात्मा की प्राप्ति के लिए चित्त की शुद्धि पर बल देते हैं। उनके अनुसार जिस प्रकार शांत और निर्मल जल में ही साफ प्रतिबिंब बनता है उसी प्रकार से आत्मा के मोह अहंकार वासना इत्यादि विकारों से मुक्त होने पर ही उसमें परमात्मा की सत्ता की अभिव्यक्ति होती है।

कबीर की यह विचारधारा शंकराचार्य द्वारा प्रस्तुत घटाकाश, मठाकाश दृष्टांत से मेल खाता है। कबीर की अनेक उक्तियां तो जैसे शंकराचार्य के कथन का अनुवाद सी प्रतीत होती हैं। जागरण के लिए शंकराचार्य ज्ञात, ज्ञान और ज्ञेय अद्वैत भाव पर विश्वास करते हैं। कबीर का भी कथन हैदृ

खालिक खलक खलक में खालिक
सब जग रहा समाई रे।

इसी प्रकार से कबीर ने शंकराचार्य की भांति माया को परमात्मा की प्राप्ति में मुख्य बाधा के रूप में प्रस्तुत किया है। इस संबंध में कबीर की अनेक उक्तियों को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। यथा–

माया महाठगिनी हम जानी
या
माया दीपक नर पतंग, भ्रमि भ्रमि इवें पड़त।
कहै कबीर गुर ग्यान पैं, एक आध उबरंत ।

अद्वैत वेदांती संपूर्ण सृष्टि परमात्मा की सत्ता की व्याप्ति मानते हैं। ईशोपनिषद में उल्लेख है–

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

ॐ ईशावास्यमिदँ सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम।

(ईशोपनिषद प्रथम अध्याय प्रथम मंत्र)

इसी प्रकार से कबीर कहते हैंदृष्साईं के सब जीव हैं कीरी कुंजर दोउ

पर यहाँ एक बात और द्रष्टव्य है। श्यामसुन्दर दास जी का स्पष्ट कथन है कि ''कबीर ने माया को मिथ्या या भ्रममात्र माना है, जिसका कारण अज्ञान है। यह शकंर का अद्वैत है।"3 पर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे विद्वान यह दिखाकर भी कि 'माया निरंजन की शक्ति है' ब्रह्मण्ड में जो माया है, पिण्ड में वही कुंडलिनी है। कुडंलिनी का ही नाम माया है, आद्या शक्ति है। उसे अन्त में वेदान्त के साथ ही जोड़ देते है – ''कबीर दास ने माया के सम्बन्ध में जो कुछ कहा है वह वस्तुतः वेदान्त द्वारा निर्धारित अर्थ में ही। खूब संभव है कि कबीरदास ने भक्ति दृ सिद्धान्त के साथ ही माया संबंधी उपदेश भी रामानंदाचार्य से ही पाया था...।"4

कबीर की साधना पद्धति पर सर्वाधिक प्रभाव सिद्ध और नाथों का है। यहां से कबीर ने सहज साधना नैरात्म्य भावना, आत्म शुद्धि, हठयोग, कुंडलिनी जागरण तथा साधनात्मक रहस्यवाद इत्यादि साधना पद्धतियों को कबीर ने सिद्धों और नाथों से सीधे ग्रहण किया है। कुंडलिनी जागरण, हठयोग से संबंधित अनेक दोहे एवं पद कबीर की बानियों में भरे पड़े हैं। कबीर ने स्थान स्थान पर इड़ा, पिंगला एवं सुषुम्ना इत्यादि नाड़ियों का तथा षडचक्रों इत्यादि का उल्लेख किया है। केवल विचार के क्षेत्र में ही नहीं, अपितु कबीर की अभिव्यक्ति अथवा काव्य शैली पर भी सिद्ध – नाथों की प्रणाली का स्पष्ट प्रभाव है। उदाहरण के लिए अंतः साधनात्मक अनुभूतियां को व्यक्त करने के लिए सिद्ध व नाथ साधकों ने एक विशेष प्रकार की भाषा शैली का उपयोग किया जिसे संधा भाषा शैली कहा जाता है। कबीर के साहित्य में इसका प्रयोग उलटबासी के रूप में दिखाई पड़ता है।

कबीर ने सिद्ध और नाथों से गृहीत साधना पद्धति को और भी विकसित करने का सफल प्रयत्न किया है। उदाहरण के लिए हठयोग की साधना में नाथ योगी छह चक्र का उल्लेख करते हैं । पहला चक्र मूलाधार तथा छठवां चक्र आज्ञा चक्र है।

कबीर का मानना है कि अधोमुखी कुंडलिनी शक्ति का ऊर्ध्व मुखी होकर आज्ञा चक्र तक पहुंच जाने के उपरांत भी साधक के अधःपतन की संभावनाएं शेष रहती हैं। कबीर आज्ञा चक्र के भी ऊपर सातवें चक्र के रूप में सहस्त्रार चक्र की परिकल्पना प्रस्तुत करते हैं। उनका मानना है कि सहस्त्रार चक्र से झरने वाले अमृत का पान करने के उपरांत आत्मा के पुनः अधःपतन की संभावनाएं निःशेष जाती हैं।

साधनात्मक रहस्यवाद के साथ–साथ अपनी साधना पद्धति में कबीर ने सूफियों के भावनात्मक रहस्यवाद का भी उपयोग किया है। ज्ञानमार्ग और योगमार्ग के साथ–साथ कबीर भक्ति मार्ग के भी धीर पथिक हैं। कबीर रामानंद के शिष्य हैं और रामानंद को उत्तर भारत में वैष्णव भक्ति के प्रसार का श्रेय दिया जाता है। कबीर को वैष्णव भक्ति की प्रेरणा निश्चित रूप से उनके गुरु रामानंद जी से ही मिली। कबीर न केवल वैष्णव भक्ति के इस मार्ग पर चले हैं बल्कि अनेक को इस पथ पर चलने की प्रेरणा भी दी है। वैष्णव भक्ति के प्रभाव में ही कबीर निर्गुण भक्त होते हुए भी परमात्मा को अनेक मानवीय संबंधों के रूप में स्मरण करते हैं।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कहीं वह हरि को अपना पिऊ कहते हैं और स्वयं को उसकी बहुरिया तो कहीं परमात्मा को माता और स्वयं को उसका पुत्र बताते हैं तथा अन्य स्थान पर वह राम को अपना स्वामी और स्वयं को उनका दास बताते हैं। प्रपत्तिभाव का आशय ईश्वर के प्रति संपूर्ण समर्पण एवं विश्वास से है। कबीर की अपने राम पर आस्था इतनी गहरी है कि उसके बल पर ही वहां संसार के समस्त विधानों को चुनौती देते हैं। वह बड़े आत्मविश्वास पूर्ण स्वर में रहते हैंदृ

जउ कासी तनु तजहि कबीरा रामहिं  कौन निहोरा–

समाज और धर्म की सत्ता के साथ–साथ निरंकुश राज ,सत्ता के सामने डटकर खड़े रहने की प्रेरणा व शक्ति भी कबीर को राम से ही प्राप्त होती है। कबीर जिस मध्यकालीन समाज की उपज थे , उस काल को सामाजिक सांस्कृतिक दृष्टि से इतिहास का आलोड़न– विलोड़न का काल भी कह सकते है। भारत में इस्लामी शासन की पूर्ण स्थापना हो चुकी थी। सल्तनत काल में शासन पद्धति इस्लामी तरीके की लागू हो चुकी थी और सामाजिक रूप से इस्लाम के प्रचार की भरसक कोशिश द्वारा की जा रही थी। कबीरपने राम के सहारे इस इस्लामिक कट्टरवाद के विरुद्ध खड़े होते है तथा राम के भरोसे ही अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए अन्य को भी प्रेरित करते हैं । वह कहते हैं–

छांड़ि कतेब राम भज बउरे जुलुम करत है भारी।
कबीर पकरी टेक राम की तुरक रहे पचि हारी।[6]

यही नहीं बल्कि कबीर तो यहां तक कहते हैं कि संसार में उनके दो ही साथी हैं एक वैष्णव अर्थात राम का भक्त और दूसरे स्वयं राम– 'मेरे संगी दुई जना, एक इक वैस्नव इक राम।'

कबीर के दर्शन के आध्यात्मिक पक्ष के साथ–साथ इसका एक सामाजिक पक्ष भी है। इस सामाजिक पक्ष को हम कबीर की आध्यात्मिक विचारधारा का ही उप उत्पाद कह सकते हैं। कबीर सिर्फ मानव  ही नहीं, अपितु प्राणी मात्र की क्षमता और उनमें पारस्परिक समरसता की बात करते हैं। उनके कथन दृ 'साईं के सब जीव हैं कीरी कुंजर दोउ' में उनकी समरस चेतना के दर्शन होते हैं। जो संसार के कण–कण में ईश्वर के ही दर्शन करता हो वह भला मनुष्य और मनुष्य में भेद कैसे करेगा? इसीलिए कबीर जाति के आधार पर किए जाने वाले भेदभाव का पुरजोर विरोध करते हैं।

डॉ रामस्वरूप चतुर्वेदी ने एक स्थान पर कहा है भारतीय दर्शन की विडंबना ही कही जाएगी एक तरफ यहां अद्वैतवादी विचारधारा के रूप में चरम एकत्व की बात की जाती है, दूसरी और जाति व्यवस्था के रूप में भेदों में भी भेद के दर्शन होते हैं । कबीर  व्यक्ति के सिद्धांत और व्यवहार मैं व्याप्त विरोधाभास पर तीखा व्यंग करते हैं। कबीर का मानना है कि धर्म धारण करने की वस्तु है ना कि प्रदर्शन करने की। इसी कारण कबीर धर्म से जुड़े हुए आडंबर और कर्मकांडों का खंडन करते हैं। कबीर के अनुसार धर्म का प्रमुख लक्षण जीव के प्रति करुणा तथा आचरण की शुद्धता है । वह ऐसे लोगों की धार्मिकता पर सवाल खड़े करते हैं जो नियम धर्म की बड़ी–बड़ी बातें करने के बावजूद प्राणी के प्रति करुणा और आचरण की शुद्धता का पालन नहीं करते। ऐसे लोगों पर व्यंग्य करते हुए कबीर कहते हैं–

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

अरे इन दोहुन राह न पाई।
हिंदू अपनी करै बड़ाई गागर छुवन न देई।
बेस्या के पायन–तर सोवै यह देखो हिंदुआई।
मुसलमान के पीर–औलिया मुर्गी मुर्गा खाई।
खाला केरी बेटी ब्याहै घरहिं में करै सगाई।

यह व्यंग्य तब और पैना हो जाता है, जब धर्म के ठेकेदार धर्माडंबर को लेकर विद्रूप खेल खेलते हुए दिखाई देते है। कबीरदास हिन्दू– मुसलमान मतों का समन्वय नहीं करते, उन्होने समझौते का रास्ता नहीं चुना। अपने समाज के प्रति कबीर इतने सजग है कि उसमे वो सुधार कि संभावना नहीं देखते। वे सम्पूर्ण जंजालों और कुसंस्कारों को नष्ट करना चाहते है। उनकी कविता में धर्म की संकीर्णता पर प्रहार है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि कबीर के व्यक्तित्व के मूल मे एक संत–भक्त अवस्थित है, न कि कवि या समाज सुधारक रूप। सच्चे भक्त के खांटीपन ने कबीर के व्यक्तित्व में भीतर एक ऐसा खरापन भर दिया था कि वह किसी भी प्रकार के धार्मिक आडंबर, पोंगापंथी को सहन नहीं कर पाते थे। उनके आध्यात्मिक विचार आज भी समाज के लिए दिशा निर्देशन का काम कर कर रहे है।

प्रेम, मानवता, सद्भाव, सौहार्द्र और नैतिकता की बहाली के लिए कबीर के विचारों का पुनः अनुसरण समय कि माँग है। "वे हर जेल के खिलाफ आजादी है, हर सत्ता के खिलाफ सृजनधर्मी विपक्ष है। कठमुल्लापन और पुरोहितवाद, कट्टरपंथ के खिलाफ अब कबीर के विपक्ष की जरूरत है।"7

## संदर्भ ग्रंथ सूची–

1– रामचरितमानस मूल गुटका, (उत्तरकाण्ड), गीताप्रेस , गोरखपुर, संवत 2061, पृ.–668

2– द्विवेदी, आचार्य हजारी प्रसाद, कबीर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995, पृ. 171

3– दास, डॉ. श्यामसुन्दर, कबीर ग्रंथावली, मलिक एण्ड कम्पनी, जयपुर, 2016, पृ. 34

4– द्विवेदी, आचार्य हजारी प्रसाद, कबीर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995, पृ. 92–93

5– तिवारी, डॉ. पारसनाथ, कबीर वाणी, राका प्रकाशन, इलाहाबाद , 2010, पृ. 172

6– वही, पृ. 178

7– सिंह, ठाकुर जीवन, मानवीय चेतना की मुख्य धारा और कबीर य (कबीरदास रू विविध आयाम, प्रभाकर श्रोत्रिय), भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता, प्रथम संस्करण, 2002, पृ. 97